International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 6, September-October 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में मास्टर सूर्य सेन का योगदान

Dr. Abhinandan Swaroop

Lucknow, Uttar Pradesh

सार

सूर्य सेन (22 मार्च 1894 — 12 जनवरी 1934) भारत की स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रान्तिकारी थे। उन्होने इंडियन रिपब्लिकन आर्मी की स्थापना की और चटगांव विद्रोह का सफल नेतृत्व किया। वे नेशनल हाईस्कूल में सीनियर ग्रेजुएट शिक्षक के रूप में कार्यरत थे और लोग प्यार से उन्हें "मास्टर दा" कहकर सम्बोधित करते थे।

अंग्रेजों ने उन्हें १२ जनवरी १९३४ को मेदिनीपुर जेल में फांसी दे दी। सूर्य सेन के पिता का नाम रमानिरंजन था। चटगांव के नोआपाड़ा इलाके के निवासी सूर्य सेन एक अध्यापक थे। १९१६ में उनके एक अध्यापक ने उनको क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित किया जब वह इंटरमीडियेट की पढ़ाई कर रहे थे और वह अनुशीलन समूह से जुड़ गये। बाद में वह बहरामपुर कालेज में बी ए की पढ़ाई करने गये और युगान्तर से परिचित हुए और उसके विचारों से काफी प्रभावित रहे। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से संबद्ध इतिहासवेत्ता एम मलिक के अनुसार घटना 18 अप्रैल 1930 से शुरू होती है जब बंगाल के चटगांव में आजादी के दीवानों ने अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने के लिए इंडियन रिपब्लिकन आर्मी (आईआरए) का गठन कर लिया।

आईआरए के गठन से पूरे बंगाल में क्रांति की ज्वाला भड़क उठी और 18 अप्रैल 1930 को सूर्यसेन के नेतृत्व में दर्जनों क्रांतिकारियों ने चटगांव के शस्त्रागार को लूटकर अंग्रेज शासन के खात्मे की घोषणा कर दी। क्रांति की ज्वाला के चलते हुकूमत के नुमाइंदे भाग गए और चटगांव में कुछ दिन के लिए अंग्रेजी शासन का अन्त हो गया।

इस घटना ने आग में घी का काम किया और बंगाल से बाहर देश के अन्य हिस्सों में भी स्वतंत्रता संग्राम उग्र हो उठा। इस घटना का असर कई महीनों तक रहा। पंजाब में हरिकिशन ने वहां के गवर्नर की हत्या की कोशिश की। दिसंबर 1930 में विनय बोस, बादल गुप्ता और दिनेश गुप्ता ने कलकत्ता की राइटर्स बिल्डिंग में प्रवेश किया और स्वाधीनता सेनानियों पर जुल्म ढ़हाने वाले पुलिस अधीक्षक को मौत के घाट उतार दिया।

मलिक के अनुसार आईआरए के इस संग्राम में दो लड़कियों प्रीतिलता वाद्देदार और कल्पना दत्त ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सत्ता डगमगाते देख अंग्रेज बर्बरता पर उतर आए। महिलाओं और बच्चों तक को नहीं बख्शा गया। आईआरए के अधिकतर योद्धा गिरफ्तार कर लिए गए और तारकेश्वर दस्तीदार को फांसी पर लटका दिया गया।

अंग्रेजों से घिरने पर प्रीतिलता ने जहर खाकर मातृभमि के लिए जान दे दी, जबकि कल्पना दत्त को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

How to cite this paper: Dr. Abhinandan Swaroop "Contribution of Master Surya Sen in Indian Independence Movement" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-6, October 2022, pp.422-424, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd51891.pdf

IJTSRD51891

Copyright © 2022 by author(s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

परिचय

सूर्य सेन इस विद्रोह के बाद छिपे रहे और एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलते रहे। वे एक कार्यकर्ता, एक किसान, एक पुजारी, गृह कार्यकर्ता या धार्मिक मुसलमान के रूप में छिपे रहे। इस तरह उन्होंने ब्रिटिशों के गिरफ्त में आने से बचते रहे। एक बार उन्होंने नेत्र सेन नाम के एक आदमी के घर में शरण ली। लेकिन नेत्र सेन ने उनके साथ छल कर धन के लालच में ब्रिटिशों को उनकी जानकारी दे दी और पुलिस ने फरवरी 1933 में उन्हें पकड़ लिया। इससे पहले कि नेत्र सेन को अंग्रेजों ने पुरस्कृत किया हो, क्रांतिकारी किरण सेन उनके घर में आये और दा (एक लंबी चाकू) के साथ उसका सिर काट डाला। नेत्र सेन की पत्नी सूर्य सेन के एक बड़ी समर्थक थी, इसलिए उन्होंने कभी भी उस क्रांतिकारी के नाम का खुलासा नहीं किया जिन्होंने नेत्र सेन की हत्या की थी। सेन को फांसी देने से पहले, अमानवीय ब्रिटिश शासकों ने उन पर क्रूरता से अत्याचार किया। बर्बर ब्रिटिश

जल्लादों ने हथौड़े के साथ उनके सभी दांतों को तोड़ दिया, और सभी नाखूनों को निकाल फेंका। उनके सभी अंगों और जोड़ों को तोड़ दिया गया और उनके अचेतन शरीर को फांसी की रस्सी तक घसीटा गया था। 12 जनवरी 1934 को एक अन्य क्रांतिकारी तारकेश्वर दस्तीदार को भी सेन के साथ फांसी दी गई थी। उनकी मृत्यु के बाद, उनके मृत शरीर को अंतिम संस्कार नहीं दिया गया। बाद में पाया गया कि जेल अधिकारियों द्वारा,एक धातु के पिंजरे में उसकी मृत शरीर को डाल दिया और बंगाल की खाड़ी में फेंक दिया गया था।[1]

उन्होने आखिरी पत्र अपने दोस्तों को लिखा था जिसमें कहा था: "मौत मेरे दरवाजे पर दस्तक दे रही है। मेरा मन अनन्तकाल की ओर उड़ रहा है ... ऐसे सुखद समय पर,ऐसे गंभीर क्षण में, मैं तुम सब के पास क्या छोड़ जाऊंगा ? केवल एक चीज, यह मेरा सपना है, एक सुनहरा सपना- स्वतंत्र भारत का सपना .... कभी भी 18 अप्रैल, 1930, चटगांव के विद्रोह के दिन को मत भूलना ... अपने दिल के देशभक्तों के नाम को स्वर्णिम अक्षरों में लिखना जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता की वेदी पर अपना जीवन बलिदान किया है।"

हमारे देश को आजादी यों ही नसीब नहीं हुई है। भारत की स्वाधीनता की पृष्ठभूमि में कई महान क्रांतिकारियों ने अपने देश की आजादी की खातिर खून के कड़वे घूंट पीये हैं। ऐसे ही एक महान देशभक्त क्रांतिकारी थे सूर्यसेन। जिन्हें अंग्रेजों ने मरते दम तक असहनीय यातनाएं दी थीं। अविभाजित बंगाल के चटगांव चिट्टागोंग अब बांग्लादेश में में स्वाधीनता आंदोलन के अमर नायक बने सूर्यसेन उर्फ सुरज्या सेन का जन्म 22 मार्च, 1894 को हुआ था। क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी सूर्यसेन को द हीरो ऑफ चिट्टागोंग के नाम से भी जाना जाता है।

अंग्रेजी हुकूमत क्रांतिकारी सूर्य सेन से इतना खौफ खाती थी कि उन्हें बेहोशी की हालत में फांसी पर चढ़ाया गया था। अंग्रेजों के जुल्म ही दास्तां सिर्फ इतनी ही नहीं है। ब्रितानी तानाशाही की अमानवीय बर्बरता और क्रूरता की हद तब देखी गई जब सूर्यसेन को फांसी के फंदे पर लटकाया जा रहा था। फांसी के ऐन वक्त पहले उनके हाथों के नाखून उखाड़ लिए गए। उनके दांतों को तोड़ दिया गया, ताकि अपनी अंतिम सांस तक वे वंदेमातरम का उदघोष न कर सकें। सूर्यसेन के संघर्ष की बानगी पढ़कर ही रूह कांप उठती है। लेकिन उन्होंने यह सब मातृभूमि हंसते हुए झेला था।

पेशे से शिक्षक रहे बंगाल के इस नायक को लोग सूर्यसेन कम मास्टर दा कहकर ज्यादा पुकारते थे। 1930 की चटगांव आर्मरी रेड के नायक मास्टर सूर्यसेन ने अंग्रेज सरकार को सीधी चुनौती दी थी। उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर चटगांव को अंग्रेजी हुकूमत के शासन के दायरे से बाहर कर लिया था और भारतीय ध्वज को पहराया था। उन्होंने न केवल क्षेत्र में ब्रिटिश हुकूमत की संचार सुविधा ठप कीं बल्कि रेलवे, डाक और टेलीग्राफ सब संचार एवं सूचना माध्यमों को ध्वस्त करते हुए चटगांव से अंग्रेज सरकार के संपर्क तंत्र को ही खत्म कर दिया था। शिक्षक बनने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की चटगांव जिला शाखा के अध्यक्ष भी चुने गए थे। उन्होंने धन और हथियारों की कमी को देखते हुए अंग्रेज सरकार से गुरिल्ला युद्ध करने का निश्चय किया। उन्होंने दिन-दहाड़े 23 दिसंबर, 1923 को चटगांव में असम-बंगाल रेलवे के ट्रेजरी ऑफिस को लूटा। किंतु उन्हें सबसे बड़ी सफलता चटगांव आर्मरी रेड के रूप में मिली, जिसने अंग्रेजी सरकार को झकझोर दिया था। मास्टरा दा ने युवाओं को संगठित कर भारतीय प्रजातांत्रिक सेना नामक संगठन खड़ा किया। 18 अप्रैल, 1930 को सैनिक वस्त्रों में इन युवाओं ने के नेतृत्व में दो दल बनाए। इन्होंने चटगांव के सहायक सैनिक शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया। किन्तु दुर्भाग्यवश उन्हें बंदूकें तो मिलीं, किंतु उनकी गोलियां नहीं मिल सकीं। क्रांतिकारियों ने टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार काट दिए और रेलमार्गों को अवरुद्ध कर दिया। अपनी साहसिक घटनाओं द्वारा अंग्रेजी सरकार को छकाते रहे। ऐसी अनेक घटनाओं में 1930 से 1932 के बीच 22 अंग्रेज अधिकारी और उनके लगभग 220 सहायकों की हत्याएं की गईं। इस दौरान मास्टर सूर्यसेन ने अनेक संकट झेले।

अंग्रेज सरकार ने सूर्यसेन पर 10 हजार रुपए का इनाम भी घोषित कर दिया था। इसके लालच में एक धोखेबाज साथी नेत्रसेन की मुखबिरी पर 16 फरवरी, 1933 को अंग्रेज पुलिस ने सूर्यसेन को गिरफ्तार कर लिया। 12 जनवरी, 1934 को चटगांव सेंट्रल जेल में सूर्यसेन को साथी तारकेश्वर के साथ फांसी की सजा दी गई, लेकिन फांसी से पूर्व उन्हें कई अमानवीय यातनाएं दी गईं। ब्रितानी हुकूमत की क्रूरता और अपमान की पराकाष्ठा यह थी की उनकी मृत देह को भी धातु के बक्से में बंद करके बंगाल की खाड़ी में फेंक दिया गया। आजादी के बाद चटगांव सेंट्रल जेल के उस फांसी के तख्त को बांग्लादेश सरकार ने बनाया मास्टर सूर्यसेन स्मारक घोषित किया था। भारत डिस्कवरी डॉट ओरआरजी के अनुसार, मास्टर सूर्यसेन ने फांसी के एक दिन पूर्व 11 जनवरी, 1934 को अपने एक मित्र को अंतिम पत्र लिखा था। इसमें उन्होंने लिखा, मृत्यु मेरा द्वार खटखटा रही है। मेरा मन अनंत की और बह रहा है। मेरे लिए यह वह पल है, जब मैं मृत्यु को अपने परम मित्र के रूप में अंगीकार करूं। इस सौभाग्यशील, पवित्र और निर्णायक पल में, मैं तुम सबके लिए क्या छोड़ कर जा रहा हूं? सिर्फ एक चीज - मेरा स्वप्न, मेरा सुनहरा स्वप्न, स्वतंत्र भारत का स्वप्न। प्रिय मित्रो, आगे बढ़ो और कभी अपने कदम पीछे मत खींचना। उठो और कभी निराश मत होना। सफलता अवश्य मिलेगी। [2]

विचार-विमर्श

वर्ष 1918 में जेल से छूटने के बाद सूर्य सेन ने चटगांव में ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया। सूर्य सेन अपने साथियों निर्मल सेन और अंबिका चक्रवर्ती के साथ 1930 में इंडियन रिपब्लिकन आर्मी (IRA) नामक एक संगठन का गठन किया जहां कई क्रांतिकारियों ने इस विद्रोह आंदोलन में उनका साथ दिया। उसी वर्ष 18 अप्रैल को इस संगठन के सदस्यों ने सूर्य सेन के नेतृत्व में चटगांव में ब्रिटिश पुलिस शस्त्रागार बलों पर छापे की साजिश रची। इस योजना में उन्होंने खुद को पाँच समूहों में विभाजित किया जिनका उद्देश्य शस्त्रागार को जब्त करना था। योजना को सफल करने के लिए पूरे चटगांव शहर की संचार प्रणाली जैसे टेलीफोन, टेलीग्राफ और रेलवे को उनके द्वारा नष्ट कर दिया गया था। विध्वंस ने अंग्रेजों को शहर में होने वाली घटनाओं से अलग कर दिया योजना के क्रियान्वयन के बाद विद्रोहियों ने हथियार लूट लिए लेकिन गोला-बारूद पर कब्जा करने में विफल रहे घटना स्थल से भागने से पहले क्रांतिकारियों

ने मौके पर भारतीय ध्वज फहराया जल्द ही ब्रिटिश सरकार द्वारा किए गए छापे में चटगांव शस्त्रागार छापे के कुछ ही दिनों बाद जलालाबाद हिल्स में कई क्रांतिकारियों की गिरफ्तारी हुई। गिरफ्तारी के दौरान पुलिस सैनिकों और क्रांतिकारियों के बीच एक गंभीर संघर्ष हुआ जिसमें 12 क्रांतिकारियों और 80 पुलिस कर्मियों की मौत हो गई। कई क्रांतिकारी घटनास्थल से भागने में सफल रहे जिसमें सूर्य सेन भी शामिल थे। भागने के बाद सूर्य सेन और उनके समूह के सदस्यों ने खुद को छोटे समूहों में विभाजित कर लिया और आस-पास के गांवों में छिप गए। चटगांव शस्त्रागार छापे के युवा क्रांतिकारियों को 1930 में सूर्य सेन द्वारा भर्ती किया गया था। जिसमें अनंत सिंह, गणेश घोष और लोकनाथ बल प्रमुख क्रांतिकारी थे जो भारत में ब्रिटिश राज के खिलाफ लड़ने के लिए सूर्य सेन के आंदोलन में शामिल हुए थे।

चटगांव शस्त्रागार छापे के बाद सूर्य सेन और उनके साथियों को ब्रिटिश सरकार ने भगोड़ा घोषित कर दिया। इस दौरान सूर्य सेन ने अपनी पहचान छुपाते हुए कुछ समय तक कामगार, किसान, पुजारी, गृहिणी के रूप में काम किया था। वह अपने दोस्त के यहां छिपने में भी कामयाब रहे। लेकिन सूर्य सेन के एक रिश्तेदार नेत्रा सेन ने जो उनके दोस्त के घर के पास रहता था ने ब्रिटिश पुलिस को उनके ठिकाने की जानकारी लीक कर दी। जिसके बाद 16 फरवरी 1933 को ब्रिटिश पुलिस ने सूर्य सेन को गिरफ्तार कर लिया। बाद में सूर्य सेन के क्रांतिकारी साथी ने नेत्रा सेन का नुकीले चाकू से सिर काट दिया था। फांसी दिए जाने से पहले उन्हें अंग्रेजों ने बेरहमी से प्रताड़ित किया था। उनके दांतों पर हथौड़ा मारा और उनके नाखूनों को ब्रिटिश जेलर ने तोड़ दिया था ताकि वह 'वंदे मातरम' का जाप न कर सकें। उनके जोड़ों, अंगों और हड्डियों को बुरी तरह तोडा गया था। जिसके बाद उन्हें 12 जनवरी 1934 को फांसी पर लटका दिया गया था। उनके समूह के सदस्यों को जल्द ही अंग्रेजों ने पकड़ लिया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई। सूर्य सेन ने 1933 में फांसी पर लटकने से पहले अपने एक करीबी दोस्त को एक पत्र लिखा था। इस पत्र में लिखा था-

मौत मेरे दरवाजे पर दस्तक दे रही है। मेरा मन अनंत काल की ओर जा रहा है। ऐसे दुखद समय पर, ऐसी कब्र पर, ऐसे महत्वपूर्ण क्षण में, मैं तुम्हारे पीछे क्या छोड़ंगा? एक ही चीज है, वो है मेरा सपना, एक सुनहरा सपना- आजाद भारत का सपना। चटगांव में पूर्वी विद्रोह के दिन 18 अप्रैल 1930 की तारीख को कभी न भूलें। अपने दिल के अंदर लाल अक्षरों में उन देशभक्तों के नाम लिखो जिन्होंने भारत की आजादी की वेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे दी।"[3]

परिणाम

सूर्य सेन को 1933 में बांग्लादेश के चट्टोग्राम में अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया था। जिस स्थान पर उन्हें फांसी दी गई थी उसे बांग्लादेश सरकार द्वारा आम जनता के लिए एक ऐतिहासिक स्मारक के रूप में नामित किया। स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा सूर्य सेन की स्मृति में कोलकाता में 'मास्टरदा सुरजो सेन मेट्रो स्टेशन' नामक एक मेट्रो रेलवे स्टेशन का उद्घाटन किया। भारतीय रिपब्लिकन आर्मी (IRA) नाम के सूर्य सेन द्वारा शुरू किया गया स्वतंत्रता आंदोलन उनकी फांसी के तुरंत बाद बंद हो गया। यह आंदोलन 1916 के आयरलैंड में ईस्टर राइजिंग से प्रभावित था। सूर्य सेन और उनके साथियों ने 18 अप्रैल 1930 को हथियारों की छापेमारी के दौरान आम जनता को दो पर्चे बांटे। 'देशद्रोह के कानूनों को तोड़ना' क्रांतिकारियों द्वारा वितरित पहला पैम्फलेट था जिसने चटगांव की स्वतंत्रता का संकेत दिया था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन के बाद और दूसरा पैम्फलेट भारत के युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए छापा गया था। [4]

निष्कर्ष

भारतीय इतिहास की पुस्तक 'इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस 1857-1947' प्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार बिपन चंद्र द्वारा लिखी गई थी। इस पुस्तक में बिपन चंद्र ने सूर्य सेन से जुड़ी एक घटना का वर्णन किया है। [5] उन्होंने कहा- भारतीय रिपब्लिकन सेना, चटगांव शाखा के नाम से की गई छापेमारी में कुल मिलाकर पैंसठ लोग शामिल थे। सभी क्रांतिकारी दल पुलिस शस्त्रागार के बाहर एकत्रित हुए जहाँ सूर्य सेना एक बेदाग सफेद खादी धोती और एक लंबा कोट और कड़े लोहे की गांधी टोपी पहने हुए एक सैन्य सलामी ली, 'वंदे मातरम' और 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारों के बीच राष्ट्रीय ध्वज फहराया, और एक अनंतिम क्रांतिकारी सरकार की घोषणा की।"[6]

संदर्भ

[1] "सूर्यसेन के पराक्रम की कहानी है चटगांव विद्रोह". मूल से 10 नवंबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 नवंबर 2013.

[2] चटगाँव-विद्रोह की रोमांचक कहानी

[3] Banglapedia article on Surya Sen

[4] सूर्य सेन book

[5] चटगांव विद्रोह के नायक - "मास्टर दा"

[6] चटगाँव आर्मरी रेड के नायक मास्टर सूर्य सेन